एलाइज़ा के चैरी वृक्ष

लेखन: आन्द्रीया ज़िमरमैन

चित्र : जू हौंग चैन

भषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एलाइज़ा सिडमोर एक अद्भुत महिला थीं। साहसी और प्रतिभावान। उन्होंने दुनिया भर में यात्राएं कीं और तमाम दिलचस्प जगहों पर गईं। अपनी यात्राओं के बारे में अख़बारों और पत्रिकाओं में लेख लिखे। इनमें नैशनल जियोग्रैफिक पत्रिका भी शामिल थी। वे नैशनल जियोग्रैफिक की पहली लेखिका और महिला फोटोग्राफर भी थीं। उन्होंने सात किताबें प्रकाशित कीं, जिनमें एक अलास्का की पहली यात्रा-मार्गदर्शिका भी थी।

जपान के बागानों व सजीले नदी तटों को देखने के बाद उन्हें चैरी के फूलों से प्यार हो गया। ये फूल गुलाबी बादलों के मानिन्द सब कुछ ढ़क देते थे। एलाइज़ा को इन फूलों ने इस कदर मोहा कि वे उन्हें अमरीका लाना चाहती थीं। चाहती थीं कि वे उनके शहर वॉशिंगटन डी.सी. की ख़ूबसूरती में चार चाँद लगाएँ।

पर एलाइज़ा का यह खयाल औरों को पसन्द नहीं आया। खास तौर से बागान निरीक्षकों को। एलाइज़ा साल दर साल, हरेक नए निरीक्षक से मिलतीं, उसे अपनी योजना समझातीं। पर किसीने उनकी बात नहीं मानी। आख़िरकार उन्होंने राष्ट्रपति की पत्नी हैलन टाफ्ट से मदद मांगी।

चैरी के दरख़्तों को वॉशिंगटन के परिदृश्य का हिस्सा बनने में बीस से भी अधिक वर्ष लगे। पर उनके दृढ़ संकल्प और जापान प्रेम की बदौलत वॉशिंगटन के बाशिन्दे और वहाँ आने वाले सैलानी आज भी इन सुन्दर वृक्षों का लुत्फ़ उठा सकते हैं।

एलाइज़ा के चैरी वृक्ष

लेखन: आन्द्रीया ज़िमरमैन

चित्र : जू हौंग चैन

भषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एलाइज़ा के
चैरी वृक्ष

एलाइज़ा के चैरी वृक्ष

कई बार व्यक्ति अपने किसी अच्छे ख़याल से भारी असर डाल पाता है। एलाइज़ा सिडमोर ऐसी ही इन्सान थीं। उन्होंने अमरीका की राजधानी वॉशिंगटन डी.सी. की तस्वीर ही बदल डाली।

एलाइज़ा और उसका बड़ा भाई अपनी माँ के बोर्डिंग हाउस में बड़े हुए। यहाँ उनकी मुलाक़ात राजनीतिज्ञों और सैलानियों से होती थी जो वहाँ ठहरा करते थे। एलाइज़ा की माँ की दोस्ती राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन और उनकी पत्नी से थी। एलाइज़ा को बचपन में व्हाइट हाउस जा उनसे मिलने और वहाँ खेलने का मौका भी मिला था।

स्कूल में एलाइज़ा के पसन्दीदा विषयों में एक था भूगोल। उसे दुनिया के मुल्कों के बारे में पढ़ना अच्छा लगता था। उसे अपने शहर वॉशिंगटन डी.सी. से भी प्यार था। पर वह नक्शों में नज़र आने वाली नई-नई जगहों पर भी जाना चाहती थी। वह दुनिया देखना चाहती थी।

उन दिनों लोग अपना घर छोड़ घूमने-फिरने कम ही निकलते थे। एलाइज़ा ख़ुशकिस्मत थी कि उसकी माँ उसके किशोर बनने से पहले यूरोप घुमाने ले गईं थीं। उसने वहाँ कई दिलचस्प जगहें देखीं।

वे सफ़र करना चाहती थीं। पर ज़ाहिर था कि उन्हें ऐसा कर पाने का कोई तरीक़ा तलाशना था।

सो, कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद एलाइज़ा ने अख़बारों के लिए लेख लिखना शुरू कर दिया। कड़ी मेहनत की और ठीक-ठाक कमाई भी। जल्दी ही वे अपने ख़ुद के खर्च पर यात्रा करने लायक बन गईं।

1873 में एलाइज़ा पढ़ने के लिए कॉलेज गईं। उन्हें लिखना पसन्द था, और वे अच्छा लिखती भी थीं। अब वे ख़ुद को बड़ा महसूस करने लगी थीं और आत्म निर्भर बनना चाहती थीं। पर उस ज़माने में स्त्रियों के सामने विकल्प बहुत कम हुआ करते थे। पर एलाइज़ा कुछ अलग तरह से सोचती थीं। उन्हें दूसरी स्त्रियों की तरह यह नहीं लगता था कि वे एक पत्नी बन घर पर रहें। या फिर एक शिक्षिका या नर्स बन जाएं।

छब्बीस वर्ष की आयु में एलाइज़ा ने दूर-दराज स्थित अलास्का का टिकट बनवाया। वहाँ कम ही सैलानी गए थे। एलाइज़ा ने अख़बारों के लिए रिपोर्ताज लिखे। उन्हें आँखों देखी अनूठी चीज़ों को साझा करने का शौक था। सो उन्होंने अलास्का की विशाल हिम-नदियों, फौव्वारा छोड़ती व्हेल मछलियों और वहाँ के मूल निवासियों के बारे में लिखा। साथ ही एलाइज़ा ने एक किताब भी लिख डाली, जो अलास्का की पहली मार्ग-दर्शिका (गाइड बुक) थी!

वॉशिंगटन लौटने के कुछ ही दिनों बाद उन्हें फिर से घुमक्कड़ी का बुख़ार चढ़ा। इस बार उन्होंने तय किया कि वे अपने बड़े भाई से मिलने जाएंगी, जो जापान में काम करते थे। यों एलाइज़ा समुद्र पार करने जहाज़ में बैठीं।
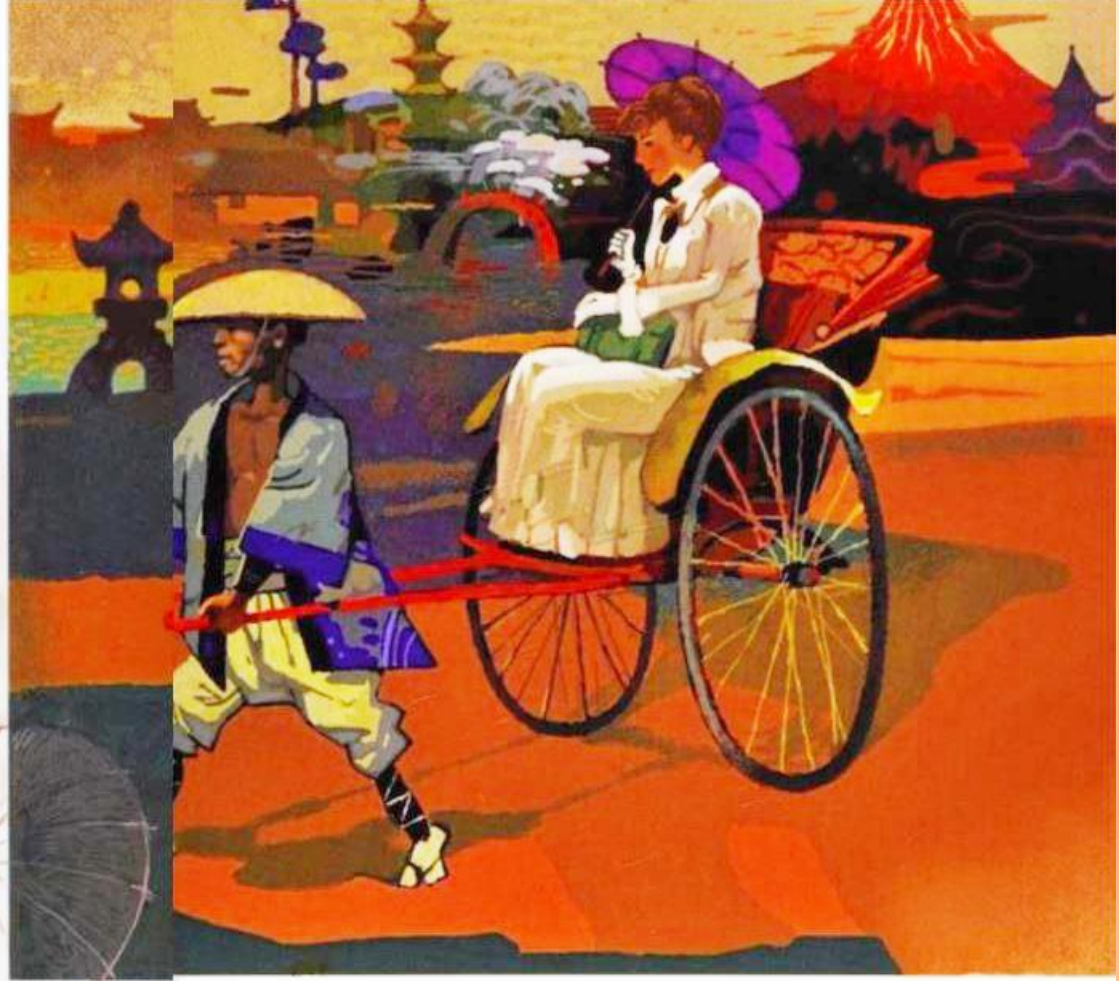
जापान में एलाइज़ा ने रेलगाड़ियों, घोड़ागाड़ियों और रिक्शों की सवारी की। वे पहाड़ों पर चढ़ीं, विचित्र पकवानों का स्वाद लिया और प्राचीन मन्दिरों को देखा। सब कुछ कितना अलग था। उन्होंने वहाँ की कला का अध्ययन किया और जापानी बोलना सीखा। वे जापान और जापान वासियों से बेहद प्यार करने लगीं।

जापान के बाग-बगीचों ने उन्हें मोह लिया। उनका पसन्दीदा पेड़ था जापानी चैरी वृक्ष। वे उसे धरती की सबसे खुबसूरत चीज़ कहती थीं। जापान के बागानों और नदी तटों पर हज़ारों चैरी के दरख़्त लगे हुए थे। जब वे बौराते वे गुलाबी बादलों-से लगने लगते। जब उनकी पंखुड़ियाँ टूट कर झरतीं तो लगता मानों गुलाबी बर्फ बरस रही हो। चैरी का वृक्ष जापान का राष्ट्रीस प्रतीक भी था। लोग उनके तले बैठ पिकनिक करने को इकट्ठा होते। वे उन पर कविताएं लिख, उनके चित्र बना इन *साकुरा* (फूलों) के प्रति सम्मान जताते।

जब एलाइज़ा घर वापस लौटीं उन्होंने जापान पर एक क़िताब लिखी। वे अपने जापान प्रेम को दूसरे अमरीकियों के साथ साझा करना चाहती थीं। वे चाहती थीं कि जापान और अमरीका में दोस्ती हो।

हालांकि एलाइज़ा हमेशा अपनी अगली यात्रा के बारे में सोचा करती थीं उन्हें वॉशिंगटन डी.सी. लौटना अच्छा लगता था। उन्हें अमरीका की इस बढ़ती राजधानी से प्यार था। वे चाहती थीं कि उनका शहर दुनिया के किसी भी खूबसूरत शहर जितना सुन्दर लगे।

एलाइज़ा ने वॉशिंगटन के नदी तट पर ताज़ा-ताज़ा बहाल हुई दलदली इलाके की निर्माण परियोजना के बारे में सोचा जो माटी-धूल से अटी थी। अचानक उन्हें एक बेहतरीन ख़याल आया। उन्हें जापान के खुशनुमा चैरी के पेड़ याद हो आए। उन्होंने साचा, ‘‘इसी की तो वॉशिंगटन को ज़रूरत है।’’
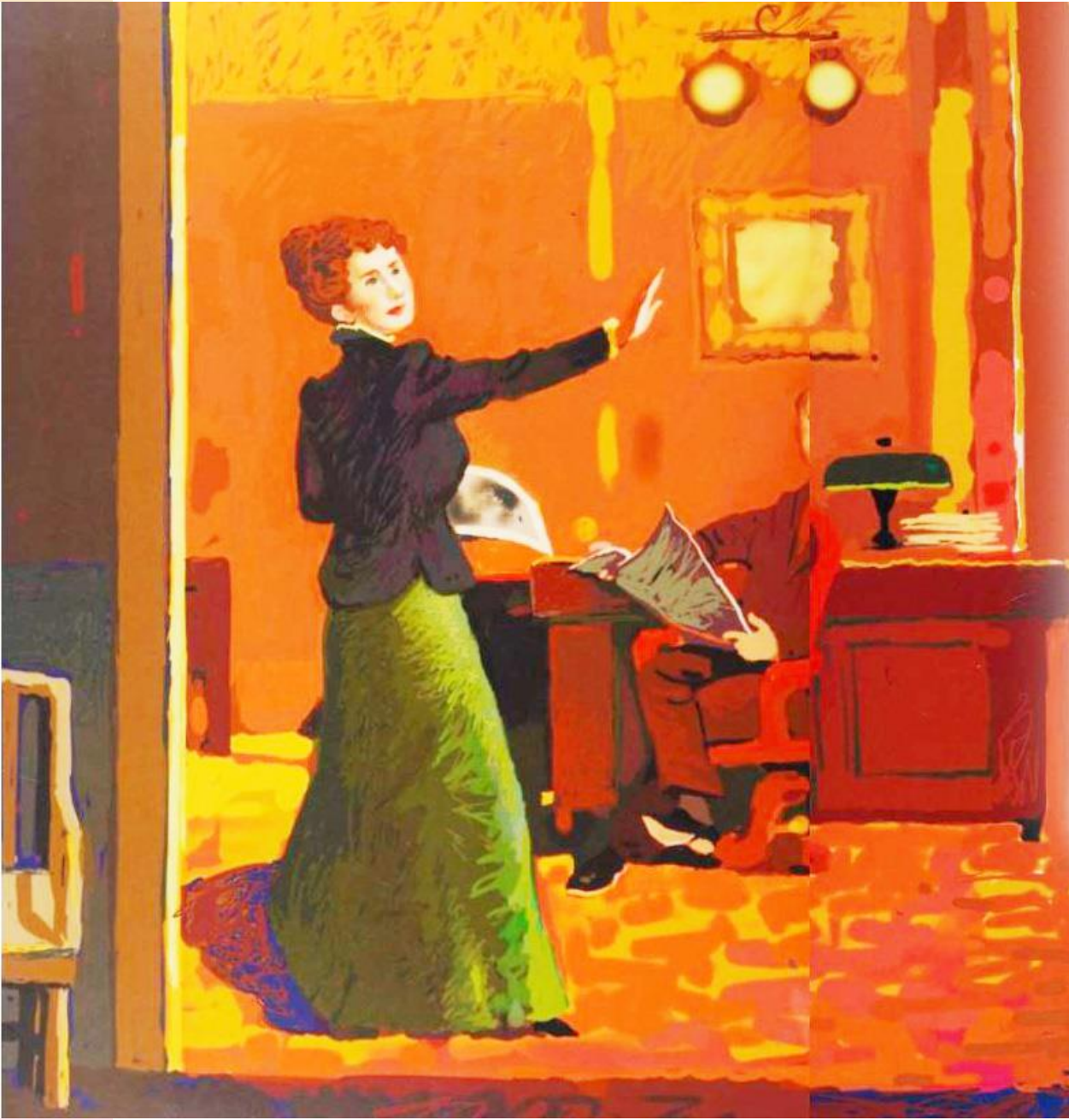
एलाइज़ा ने वॉशिंगटन के बागान निरीक्षक को उन अद्‌भुत चैरी वृक्षों के बारे में बताया, खुद की खींची तस्वीरें दिखाईं। नदी किनारे चैरी के पेड़ों को लगाने की योजना बताई। निरीक्षक ने साफ़ इन्कार कर दिया। क्योंकि उसका मानना था कि वॉशिंगटन को नए किस्म के पेड़ों की कतई ज़रूरत नहीं थी।

एलाइज़ा जानती थीं कि अच्छे विचारों को अमली जामा पहनाने के लिए कोशिश लगातार जारी रखनी पड़ती है। सो जब उस पद पर नया व्यक्ति आया एलाइज़ा ने उसे भी अपनी अनोखी योजना बताई।

इस बीच एलाइज़ा सफ़र करती रहीं। वे उन दोस्तों से भी मिलती रहीं जिन्हें सफ़र करना पसन्द था। ऐसे ही कुछ दोस्तों ने नैशनल जियोग्राफिक सोसायटी का गठन किया। यह सोसायटी उन लोगों का संगठन थी जो दुनिया के बारे में और जानना चाहते थे।

एलाइज़ा नैशनल जियोग्रैफिक में महत्त्वपूण काम करने वाली पहली स्त्री थीं। उन्होंने सोसायटी के विकास में मदद की। उन्होंने कई लेख और किताबें लिखीं। वे कई बार अलास्का और जापान गईं। भारत, चीन, रूस और जावा, जो इन्डोनेशिया का एक द्वीप था, की यात्राएं कीं।

एलाइज़ा फोटोग्राफर बनीं। उस ज़माने में बहुत ही कम स्त्रियाँ फोटोग्राफर थीं। उन्होंने विख्यात स्मिथसोनियन इन्स्टिट्यूट के लिए तस्वीरें खींचीं। ऐसे लोगों और उनके निवास स्थानों को चित्रों में दर्ज किया जिन्हें अमरीकियों ने पहले कभी देखा ही नहीं था।

पर वे चैरी वृक्षों को कभी न भूलीं। न ही उन्होंने अपनी मुहिम में हार मानी। बीस से अधिक साल गुज़र गए, पर वे लगातार कोशिश करती रहीं। वे बागान विभाग के हरेक नए निरीक्षक से मिलतीं। उसे अपना विचार बतातीं और हरेक इन्कार करता रहा।

1904 में विलियम हावर्ड टाफ्ट राष्ट्रपति चुने गए। एलाइज़ा को एक उम्दा ख़याल सूझा। वे जानती थीं कि कुछ काम करवाने में राजनीतिज्ञ मदद कर सकते हैं। सो उन्होंने राष्ट्रपति की पत्नी श्रीमति टाफ्ट को एक ख़त लिखा। उन्होंने कहा कि खूबसूरत जापानी चैरी वृक्षों से वॉशिंगटन और भी सुन्दर लगने लगेगा। एलाइज़ा को लगा था कि उन्हें फिर से 'ना' ही सुनना पड़ेगा।

पर श्रीमति टाफ्ट को एलाइज़ा का सुझाव पसन्द आया। एक उदार जापानी वैज्ञानिक टाकामिने की मदद से जापान से चैरी वृक्ष मंगवाए गए।

बड़े ही उत्साह से इन पेड़ों के आ पहुँचने का इन्तज़ार हुआ। एलाइज़ा उन दिलकश गुलाबी बादलों की कल्पना करने लगीं जो जल्द ही वॉशिंगटन में फूल सकेंगे।

जनवरी 1910 में चैरी के दो हज़ार पेड़ आ पहुँचे। वे जापान की राजधानी टोक्यो की ओर से भेंट किए गए थे। पर एक भारी समस्या हुई। पता चला कि ये पेड़ रोगी हैं और कीटों से भरे हैं। निरीक्षकों को लगा कि वे अमरीकी पेड़ों को भी बीमार कर देंगे। राष्ट्रपति बात से सहमत हुए। उन्होंने इन वृक्षों को जला देने के आदेश पर दस्तख़त कर दिए।

एलाइज़ा को घोर निराशा हुई। उन्हें यह डर भी लगा कि कहीं जापान इसे अपनी तौहीन ही न मान बैठे। पर टोक्यो के मेयर ने स्थिति समझी। उन्होंने मज़ाक भी किया कि जॉर्ज वॉशिंगटन चैरी के पेड़ को कुल्हाड़ी से काट डालते।

इधर जापान में नए पेड़ बड़ी ही सावधानी से उगाए गए। मार्च 1912 में चैरी के तीन हज़ार नए दरख़्त आए। उनको जाँचा-परखा गया। पता चला कि वे दुरुस्त हैं।

27 मार्च 1912 को एक छोटे से समारोह में पहले दो चैरी के वृक्ष रोपे गए। एलाइज़ा ने अपने एक अर्से पुराने सपने को हकीकत में बदलते देखा।

अगले कुछ सालों में वे पनपे और तब हर बसन्त में वे बौराने-फूलने लगे। लोग उन्हें देखने, उनका आनन्द लेने, उनकी खूबसूरती का जश्न मनाने आने लगे। ठीक उसी तरह जैसे जापान में होता था। एलाइज़ा ख़ुश थीं कि इन दरख़्तों ने वॉशिंगटन डी.सी. को दुनिया का सबसे सुन्दर शहर बना डाला था।

जैसे-जैसे एलाइज़ा की उम्र बढ़ने लगी, उन्हें वे सार जगहें याद आने लगीं जहाँ वे गई थीं। उनका यह विश्वास और पुख़्ता हुआ कि सभी देश एक-दूसरे के साथ अमन-चैन से रह सकते हैं। अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी साल उन्होंने इसी के लिए काम किया। वे बखूबी जानती थीं कि अपने उम्दा ख़याल के लिए इन्सान को एक अर्से तक कोशिश जारी रखनी पड़ती है।

एलाइज़ा को खुशी थीं कि वॉशिंगटन डी.सी. के चैरी वृक्ष अंतर्राष्ट्रीय शान्ति और मित्रता के प्रतीक बन सके थे।

14 अक्तूबर 1856 - एलाइज़ा सिडमोर का क्लिन्टन, आयोवा में जन्म। उनका परिवार उन्हें 'लिलि' कहता था।

1861(लगभग) - तकरीबन पाँच वर्ष की होने पर एलाइज़ा और उनका बड़ा भाई जॉर्ज, अपनी माँ के साथ वॉशिंगटन डी.सी. चले गए।
एलाइज़ा वहीं पलीं और स्कूल गईं।

1873-1875 - एलाइज़ा ने ओहायो के ओबलिन कॉलेज में अध्ययन किया।

1876 - वे अख़बारों के लिए 'सामाजिक स्तंभ' लिखने लगीं।

1883 - पहली बार अलास्का की यात्रा की।

1885 - उनकी पहली किताब *अलास्का इटस् सदर्न कोस्ट एण्ड द सिटकॉन आर्चीपलैगो* प्रकाशित हुई। यह किताब अख़बारों के लिए लिखे गए उनके यात्रा वृत्तान्तों पर आधारित थी।

1885 - वे जापान की अपनी पहली यात्रा से लौटीं। उनके भाई वहाँ अमरीकी कूटनीतिज्ञ के रूप में तैनात थे। उन्होंने वॉशिंगटन के नदी किनारे बहाल की गई ज़मीन पर जापानी चैरी वृक्षों को लगाने का प्रस्ताव बागान विभाग के सामने रखा। अगले चौबीस बरसों तक वे हर नए बागान निरीक्षक के समक्ष इस प्रस्ताव को दोहराती रहीं।

1890 - हाल में गठित नैशनल जियोग्रैफिक सोसायटी से जुड़ीं। दो दशकों से भी अधिक समय तक एलाइज़ा ने लेखक, सम्पादक, फोटोग्राफर, वक्ता व प्रबंध मण्डल के सदस्य की तरह सोसायटी में अपना योगदान दिया।

1891 - जापान पर उनकी पुस्तक *जिनरिकिशा डेयस् इन जापान* प्रकाशित हुई।

1905-1908 - एलाइज़ा के मित्र डॉ. डेविड फेयरचाइल्ड ने वॉशिगटन डी.सी. में जापानी चैरी गाछ लगाए ताकि यह सिद्ध हो सके कि वे वहाँ के वातावरण में भी अच्छी तरह पनप सकते हैं।

1909 - एलाइज़ा ने हैलन टाफ्ट को पत्र लिखा और चैरी के वृक्षों को बोने का विचार उनसे साझा किया। श्रीमति टाफ्ट मदद करने को सहमत हुईं। डॉ. जोकीची टाकामिने ने उनकी कीमत चुकाने की ज़िम्मेदारी ली।

जनवरी 1910 - दो हज़ार चैरी वृक्षों की पहली खेप जापान से आ पहुँची। पर रोगग्रस्त होने के कारण उन्हें जला दिया गया।

मार्च 1912 - तीन हज़ार से अधिक स्वस्थ चैरी वृक्षों की दूसरी खेप आई।

27 मार्च 1912 - पौटोमैक पार्क में वृक्षारोपण समारोह आयोजित किया गया।

1923 - एलाइज़ा रहने के लिए स्विसत्ज़रलैण्ड चली गईं।

3 नवम्बर 1928 – जेनेवा, स्विसत्ज़रलैण्ड में उनकी मृत्यु हुई। उनकी अस्थियाँ जापान ले जाई गईं, जहाँ योकोहामा में उन्हें दफनाया गया।

एलाइज़ा सिडमोर सच्चे अर्थों में एक विश्व यात्री थीं। खास तौर से यूरोप और एशिया में उन्होंने अनेकों यात्राएं कीं। अलास्का पर लिखी उनकी पुस्तक के अलावा उन्होंने जापान, भारत, चीन, जावा और कोरिया पर भी किताबें लिखीं।